**Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences** ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 9, September - 2022 Publication Date: 30/09/2022

DOIs:10.2018/SS/202209007 --:-- Research Article

# स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की उनके लिंग के सापेक्ष आर्थिक साक्षरता का अध्ययन

**[1] धर्म बीर पटेल, [2] डॉ पायल बनर्जी**
[1] वरिष्ठ शोध छात्र, शिक्षा विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
[2] सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
Email - [1] **dharm1990veer@gmail.com**, [2] **payel.ggv@gmail.com**

**सारांश:** आर्थिक साक्षरता आर्थिक कल्याण को प्रभावित करने वाली आर्थिक स्थितियों के बारे में पढ़ने, लिखने, समझने और अनुप्रयोग करने की क्षमता है। यह बेहतर आर्थिक माहौल को आकार देने वाली घटनाओं को समझने, चर्चा करने और प्रतिक्रिया देने की योग्यता भी है। यह न केवल अर्थशास्त्रियों के लिए ही बल्कि बच्चों से लेकर वयस्क सभी के लिए आवश्यक है। आर्थिक साक्षरता स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को उनके रोजमर्रा की आर्थिक जिंदगी के व्यवहारिक प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए आधारभूत आर्थिक अवधारणाओं के उपयोग द्वारा आर्थिक समस्याओं को हल करने की क्षमता प्रदान करती है। विद्यालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली आर्थिक साक्षरता शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि यह युवाओं को अपने निजी एवं सामाजिक जीवन, दोनों में उन्हें अर्थव्यवस्था आधारित निर्णय लेने वाले नागरिक के रूप में तैयार करती है। विद्यार्थियों को भी इस जटिल और लगातार तेजी से बदलती दुनिया में तर्कसंगत निर्णय लेने के लिए बुनियादी आर्थिक अवधारणाओं को सही ढंग से समझने और उपयोग करने की आवश्यकता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्यस्नातक स्तर के विद्यार्थियों की उनकी लिंग, निवास-स्थान, जाति, सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं अध्ययन की शाखा के सापेक्ष आर्थिक साक्षरता स्तर का अध्ययन करना। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है और इसके लिए सर्वेक्षण विधि का अनुसरण किया गया है। स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन प्रविधि द्वारा कुल 270 एवं प्रत्येक अध्ययन की शाखा बी.ए., बी.एससी. एवं बी.कॉम. से 90-90 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। आंकड़ों के संकलन हेतु शोधार्थी ने 63 बहुविकल्पीय एकांशों वाले स्वनिर्मित आर्थिक साक्षरता परीक्षण का उपयोग किया। प्रस्तुत उपकरण में आर्थिक साक्षरता के सात आयामों दुर्लभता, उत्पादक संसाधनों, आर्थिक व्यवस्था, विनिमय, आर्थिक पारितोष, बाजार और आर्थिक प्रबंधन के सम्बंध में आधारभूत अवधारणाओं और सिद्धान्तों के बारे में ज्ञान, समझ और अनुप्रयोग द्वारा इसे मापा गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एसपीएसएस के माध्यम से प्रसामान्यीकरण परीक्षण, टी-परीक्षण, एनोवा, पोस्ट हॉकएनोवा मल्टीपल कंपैरिजन लिस्ट सिग्निफिकेंट डिफरेंस (एल एस डी) परीक्षण प्रयुक्त किया गया।परिणाम में पाया कि समग्र रूप से स्नातक विद्यार्थियों के आर्थिक साक्षरता के माध्य प्राप्तांक सार्थक रूप से भिन्न हैं। इनमें लिंग के सापेक्ष स्नातक विद्यार्थियों की आर्थिक साक्षरता के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया है।

**मुख्य शब्दः** आर्थिक साक्षरता, स्नातक विद्यार्थी, दुर्लभता।

## 1. प्रस्तावनाः

शिक्षा अनुदेशन द्वारा सर्वांगीण विकास की एक ऐसी प्रक्रिया है जो उपस्थित ज्ञान की इस प्रकार समझ विकसित करता है जिससे व्यक्ति अपने जीवन के समस्त क्रियाओं में सरलता से सहभाग कर सकता है। साथ ही यह एक ओर व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है तो दूसरी ओर अवसरों और अधिकारों के प्रति सजग भी करती है। गौरतलब है कि मानव एक सामाजिक प्राणी होने के साथ-साथ एक जैविक इकाई भी है, जहाँ उसकी कुछ बुनियादी जरुरतें होती हैं जैसे भोजन, पानी, कपड़ा, रहने के लिये मकान और सामाजिक सुरक्षा आदि। इन बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति मानव के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आवश्यक है जो उसके जीवन का अंतिम लक्ष्य भी है **(अखान,2014)**। परंतु मानव की ये इच्छाएँ सीमित न होकर अनंत होती हैं और इन अपार आवश्यकताओं की अधिकतम संतुष्टि उसे निश्चित एवं सीमित संसाधनों से करना होता है। ऐसे में आर्थिक साक्षरता द्वारा आर्थिक क्रियाओं का ज्ञान महत्वपूर्ण हो जाता है।

### 1.1 आर्थिक साक्षरताः

आर्थिक साक्षरता हमारे आर्थिक कल्याण को प्रभावित करने वाली आर्थिक स्थितियों के बारे में पढ़ने, लिखने, समझने और अनुप्रयोग करने की क्षमता है एवं आर्थिक साक्षरता हमारे आर्थिक माहौल को आकार देने वाली घटनाओं को समझने, चर्चा करने

और प्रतिक्रिया देने की योग्यता है। यह न केवल अर्थशास्त्रियों के लिए ही बल्कि बच्चों से वयस्क सभी के लिए आवश्यक है **(जैकब, 1995)**। संक्षेप में आर्थिक साक्षरता को रोजमर्रा की आर्थिक जिंदगी के व्यवहारिक प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए आधारभूत आर्थिक अवधारणाओं के समूह का उपयोग करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है **(एंथनी, स्मिथ एवं मिलर 2014)**।

### 1.2 स्नातक विद्यार्थियों की आर्थिक साक्षरताः

**स्टिग्लर (1970)** ने समाज में आर्थिक साक्षरता को सुधारने के बारे में एक महत्वपूर्ण बयान दिए हैं उनके अनुसार, विद्यालयों में अर्थशास्त्र शिक्षा के माध्यम से अर्थशास्त्र के बुनियादी अवधारणाओं के बारे में सीखने के लिए शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को अवश्य प्रोत्साहित की जानी चाहिए। विद्यार्थी इसमें माहिर हो जाते हैं तो यह उन्हें आर्थिक दुनिया को समझने में मदद कर सकती है। सीखने के अगले क्रम में विद्यार्थियों के विकास के चरण के अनुसार, आर्थिक साक्षरता से संबंधित अधिगम सामग्री और अधिक विस्तृत एवं गंभीर किया जा सकता है जिससे विद्यार्थियों को अर्थव्यवस्था के बारे में फैसले लेने की क्षमता प्रदान हो सके और ऐसे में व्यक्तिगत एवं सामाजिक रूप से वे अपने आर्थिक निर्णय लेने में स्वयं सक्षम हो सकेंगे। जिस क्षण कोई वयस्क अवस्था में पहुंचता है हर किसी को अधिक जटिल आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है और उन्हें तत्काल आर्थिक निर्णय लेने की भी आवश्यकता पड़ती है। यह लिए गए आर्थिक निर्णय उनके जीवन के साथ-साथ दूसरों को भी प्रभावित करते हैं **(मेस्जारोस एवं शूटर, 1988)**। सन् 1981 में अर्थशास्त्र में नोबेल विजेता जेम्स टोबिन ने कहा था कि स्नातक होने के उपरांत हर किसी को प्रत्येक आर्थिक विकल्पों पर कोई न कोई निर्णय अवश्य लेना पड़ता है जो उन्हें उपभोक्ताओं और उत्पादकों दोनों के रूप में उनके जीवन को निर्धारित करेगा और हर बार उनके ऊपर विभिन्न प्रकार की आर्थिक प्रश्नों के वृहद आकार की बमबारी भी की जाएगी ऐसे में उनके पास इस संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता अवश्य होनी चाहिए। इसीलिए यदि अर्थव्यवस्था को व्यक्ति के जीवन का एक अभिन्न अंग माना जाए तो अर्थव्यवस्था की समझ के लिए आर्थिक ज्ञान बेहद महत्वपूर्ण है।

## 2. अध्ययन के उद्देश्यः

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की उनके लिंग के सापेक्ष आर्थिक साक्षरता स्तर का अध्ययन करना।

**शून्य परिकल्पनाः**

H01.पुरुष एवं महिला स्नातक विद्यार्थियों की आर्थिक साक्षरता के माध्य प्राप्तांकों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।

## 3. शोध प्रविधि एवं अभिकल्पः

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है और इसके लिए सर्वेक्षण विधि का अनुसरण किया गया है। स्नातक विद्यार्थियों के आर्थिक साक्षरता स्तर का उनके लिंग के सापेक्ष अध्ययन किया गया है।

**न्याय दर्शन प्रविधि एवं जनसंख्याः**

प्रस्तुत अध्ययन में 270 स्नातक विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृतयादृच्छिक न्यादर्शन प्रविधि द्वारा किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य के राज्य विश्वविद्यालयों (बिलासपुर विश्वविद्यालय, पं. रवि शंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, दुर्ग विश्वविद्यालय, बस्तर विश्वविद्यालय एवं सरगुजा विश्वविद्यालय) से सम्बद्ध केवल उन शासकीय महाविद्यालयों के स्नातक (बी.ए., बी.एससी. एवंबी.कॉम.) अंतिम वर्ष में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या के रूप में लिया गया है, जहाँ बी.ए., बी.एससी. एवंबी.कॉम. तीनों पाठ्यक्रम संचालित होते है।

**प्रयुक्त उपकरणः**

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधार्थी ने 63 बहुविकल्पीय एकांशों वाले स्वनिर्मित आर्थिक साक्षरता परीक्षण का उपयोग किया।प्रस्तुत उपकरण में आर्थिक साक्षरता के सात आयामों दुर्लभता, उत्पादक संसाधनो, आर्थिक व्यवस्था, विनिमय, आर्थिक पारितोष, बाजार और आर्थिक प्रबंधन के सम्बंध में आधारभूत अवधारणाओं और सिद्धान्तों के बारे में ज्ञान, समझ और अनुप्रयोग द्वारा इसे मापा गया है।

**प्रयुक्त सांख्यिकीः**

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एसपीएसएस के माध्यम से टी-परीक्षण, एनोवा, पोस्ट हॉकएनोवा मल्टीपल कंपैरिजन लिस्ट सिग्निफिकेंट डिफरेंस (एल एस डी) परीक्षण प्रयुक्त किया गया।

## 4. परीक्षण परिणाम एवं परिचर्चाः

**शून्य परिकल्पनाः**

H01. पुरुष एवं महिला स्नातक विद्यार्थियों की आर्थिक साक्षरता के माध्य प्राप्तांकों केबीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन का उद्देश्य स्नातक विद्यार्थियों की उनके लिंग के सापेक्ष में आर्थिक साक्षरता के माध्य प्राप्तांकों की तुलना करना था। आंकड़ों का विश्लेषण टी-परीक्षण की मदद से किया गया एवं परिणामों को नीचे तालिका में दिया गया है-

तालिकाः01 लिंग के सापेक्ष आर्थिक साक्षरता के माध्य प्राप्तांकों के बीच सार्थक अंतर परीक्षण के परिणाम का सारांश

| Variable | Gender | N | Mean | SD | t-value | Remark Sig. (2-tailed) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **Economic Literacy** | Male | 91 | 30.7253 | 8.24899 | .648 | .127 P>0.05* |
| | Female | 179 | 29.1397 | 7.94628 | | |

*Not significant at 0.05 level.

तालिका से स्पष्ट होता है कि टी-मूल्य 0.648 है और इनकापी मूल्य 0.05 से अधिक है। जिससे यह प्रदर्शित होता है कि शून्य परिकल्पना सार्थक नही है। जो यह दर्शाती है कि पुरुष एवं महिला स्नातक विद्यार्थियों की आर्थिक साक्षरता के माध्य प्राप्तांक सार्थक रूप से भिन्न नही हैं। इस शून्य परिकल्पना जो कि लिंग के सापेक्ष स्नातक विद्याथियों की आर्थिक साक्षरता के माध्य प्राप्तांकों के बीच सार्थक अंतर है, स्वीकृत की जाती है। इसका अर्थ है कि पुरुष एवं महिला स्नातक विद्याथियों में आर्थिक साक्षरता का स्तर भिन्न नहीपाया गया है। अर्थात् लिंग के सापेक्ष स्नातक विद्यार्थियों की आर्थिक साक्षरता में कोई अंतर नही है।

शोध अंध्ययनों में पाया गया है कि लिंग एक उभयनिष्ठ विषय-वस्तु रहा है और आर्थिक साक्षरता स्तर और लिंग के संबंध में दो विपरित मत पाये गये है। पहले मत के अनुसार आर्थिक साक्षरता का स्तर लिंग के अनुसार विभेदित होता है। उनका कहना है कि पुरूषों की आर्थिक साक्षरता का स्तर महिलाओं की तुलना में उच्च है। **(सिगफ्राइड, 1979; बुचर, कोयरेन एवं लुसार्डी, 2011; वैन सियाक एवं ग्लेसन, 1993; वालस्टाड एवं सोपर, 1988; वुड एवं डोयल, 2002; कैप्लान, 2001; बोल्च एंड फेल्स, 1974; विलियम्स, वोल्डोवर और ड्यूगल, 1992)** इन सभी शोध साहित्यों में लिंग के आधार पर अंतर कुछ जमीनी मुलभूत कारणों के कारण से है जिनमें-सामाजिक और सांस्कृतिक कारण **(वालस्टेड और रोब्सन, 1997)**, संज्ञानात्मक कारण **(एंडरसन एवं बेंजामिन, 1994; हर्शफेल्ड, मूर एवं ब्राउन, 1995)** और अलग-अलग शिक्षा स्तरों **(फर्बर, 1990; होर्वथ, एवं राइट, 1992)** आदि प्रमुख है। इसके अलावा कुछ शोद्यार्थियों ने लिंगों के बीच अंतर को आर्थिक साक्षरता स्तरों को मापने के लिये प्रयुक्त किये जा रहे मापनी की असंगतता (Incompatibility of scales) अथवा न्यादर्श के पक्षपात पूर्ण चयन के कारण भी पाया है **(फेबर, बिर्नबाम, ग्रीन एवं बेकर, 1983; लम्सडेन, स्काट एवं बेकर, 1987)** यद्यपि कि ये सभी शोध अध्ययन आर्थिक साक्षरता के स्तर में लिंग के आधार पर अंतर प्रदर्शित करती हैं फिर भी इसे यह कह कर नहीं नकार सकते कि ये सभी शोध अध्ययन पुराने हैं इसलिये इनमें महिला और पुरूष आर्थिक साक्षरता स्तरों के बीच अंतर है।

आर्थिक साक्षरता स्तर का लैंगिक आधार पर अंतर को नकारने वाले दूसरे मत के अनुसार पुरूषों के पक्ष में रहने वाले शिक्षा के स्तर के असंतुलनों को लिंगों के बीच ठीक करने के परिणाम स्वरूप आर्थिक साक्षरता का लिंग के आधार पर अंतर समाप्त हो रहा है **(स्वोप एवं श्मिट, 2006; ज़ीगर्ट, 2000)**। कुछ वर्तमान शोध भी इसी परिणाम के समर्थन में अपने परिणाम प्रस्तुत किये हैं उन्होंने ने भी अपने अध्ययन में पाया है कि लिंग के आधार पर आर्थिक साक्षरता स्तर और आर्थिक ज्ञान में कोई अंतर नही है **(कोशल, गुप्ता, गोयल एवं चौधरी, 2004; बेंक, योसेदोगरू एवं कैकमैक, 2015)**।

## 5. निष्कर्षः

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम उपरोक्त कारकों के प्रभाव के कारण छत्तीसगढ़ के स्नातक विद्यार्थिगण औसत आर्थिक साक्षर है। इनमें लिंग के सापेक्ष स्नातक विद्यार्थियों की आर्थिक साक्षरता के माध्य प्राप्तांकोंमें कोई सार्थक अंतर नही है।

## सन्दर्भ सूची:

1. Barrett, A. (1966). Undergraduate economic education. *The Journal of General Education,18*(1), 40-49. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/27796009
2. Butz, E. L.. (1955). Policy Formulation and Economic Literacy. *Journal of Farm Economics*, *37*(5), 1271–1277. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/1234028 21/04/2016
3. Coleman, J. R.. (1963). Economic Literacy: What Role for Television?. *The American Economic Review*, *53*(2), 645–652. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/1823904 21/04/2016
4. Coons, P. W.. (1950). Promoting Economic Literacy Through American History. *The Journal of Educational Sociology*, *23*(7), 415–423. http://doi.org/10.2307/2263544 21/04/2016
5. Frankel, M. L.. (1958). The Uses of Economic Literacy. *Challenge*, *7*(3), 42–47. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/40717497 21/04/2016
6. Gleason, J., & Van Scyoc, L. (1995). A Report on the Economic Literacy of Adults. *The Journal of Economic Education, 26*(3), 203-210. doi:1. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/1183425 doi:1
7. Gleason, J., & van Scyoc, L. J.. (1995). A Report on the Economic Literacy of Adults. *The Journal of Economic Education*, *26*(3), 203–210. http://doi.org/10.2307/1183425 21/04/2016

8. Gratton-Lavoie, C., & Gill, A.. (2009). A Study of High School Economic Literacy in Orange County, California. *Eastern Economic Journal*, *35*(4), 433–451. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/40326160 21/04/2016
9. Grimes, P. W., Millea, M. J., & Thomas, M. K.. (2010). Testing the Economic Literacy of K-12 Teachers: A State-Wide Baseline Analysis. *American Secondary Education*, *38*(3), 4–20. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/41406169 21/04/2016
10. Heebner, A. G.. (1977). Presidential Address: The Cause of Economic Literacy and The Business Economist. *Business Economics*, *12*(1), 7–10. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/23481278 21/04/2016
11. Hinshaw, C., & Siegfried, J. (1991). The Role of the American Economic Association in Economic Education: A Brief History. *The Journal of Economic Education, 22*(4), 373-381. doi:1. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/1183357 doi:1
12. Hunt, E. (1941). Economic Literacy. *The Clearing House, 15*(5), 280-280. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/30186800
13. Hunt, E. M.. (1941). Economic Literacy. *The Clearing House*, *15*(5), 280–280. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/30186800 201/04/2016
14. Jappelli, T.. (2010). ECONOMIC LITERACY: AN INTERNATIONAL COMPARISON. *The Economic Journal*, *120*(548), F429–F451. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/40929731 21/04/2016
15. Leftwich, R.. (1977). The Issues Approach to Economic Literacy. *Change*, *9*(1), 18–19. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/40162689 21/04/2016
16. Lucas, R. E., Krueger, A. B., & Blank, R. M.. (2002). Promoting Economic Literacy: Panel Discussion.*The American Economic Review*, *92*(2), 473–477. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/3083453 21/04/2016
17. McKenzie, R. B.. (1970). The Economic Literacy of Elementary-School Pupils. *The Elementary School Journal*, *71*(1), 26–35. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/1000531 21/04/2016
18. McKenzie, R. B.. (1970). The Economic Literacy of Elementary-School Pupils. *The Elementary School Journal*, *71*(1), 26–35. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/1000531 21/04/2016